<?xml version="1.0" ?>			
<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>			
<Doc id="hi -w-media-		"	lang="Hindi">
<Header type="text">			
<encodingDesc>			
<projectDesc>	CIIL-Multilingual parallel text corpora		</projectDesc>
<samplingDesc>	Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures and tables have been omitted. Samples taken from page 11-22		</samplingDesc>
</encodingDesc>			
<sourceDesc> <biblStruct> <source>			
	<category>	Aesthetics	</category>
	<subcategory>	Literature-Translation	</subcategory>
	<text>	Book	</text>
	<title>	Keshavsut	</title>
	<author>	Prabhakar Machwe	</author>
	<language>	Hindi	</language>
	<translator>		</translator>
	<vol>		</vol>
	<issue>		</issue>
</source>			
<textDes>			
	<type>		</type>
	<headline>	Jeevani	</headline>
	<words>	3889	</words>
</textDes>			
<imprint>			
	<pubPlace>	India-New Delhi	</pubPlace>
	<publisher>	Sahitya Akademi	</publisher>
	<pubDate>	1966	</pubDate>
</imprint>			
<index>			</index>
</biblStruct> </sourceDesc>			
<profileDesc> <creation>			
	<date>	4-Sep-2006	</date>
	<inputter>	Hayath Afza	</inputter>
	<proof>		</proof>
</creation>			
<langUsage>			</langUsage>
<wsdUsage>			
<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem>			
</wsdUsage>			
<textClass>			
<channel mode="w">		print	</channel>
<domain type="public">			</domain>
</textClass> </profileDesc> </Header>			

<text><body>

 केशवसुत की जन्म-तिथि और जन्म-स्थान दोनों विवाद के विषय हैं। उनके पहले जीवन-चरितकार थे उनके छोटे भाई सीताराम केशव दामले। उनके पास केशवसुत की जो जन्म-कुण्डली थी उसके आधार पर उन्होंने भारतीय तिथि फाल्गुन बदी 14,शके 1787 जन्म-तिथि लिखी, जो 15 मार्च, 1866 ईस्वी की तारीख होती ह। इस तिथि पर कई आपत्तियाँ की गई हैं। कुछ लोग कहते हैं कि जन्म-कुण्डली में ही कोई दोष ह, दूसरे लोग भारतीय तिथि-गणना में अधिक मास को जोड़ते हैं और तदनुसार ईस्वी सन् की तारीख में समानता नही पाते। कुछ प्रमाणों के अनुसार केशवसुत 7 अक्तूबर, 1866 ईस्वी में जन्मे, यद्यपि उनकी कविताएँ नियमित रूप से छापने वाली 'काव्य-रत्नावली' पत्रिका में दिसम्बर 1905 के अक में छपे मृत्यु-लेख में लिखा ह कि उनका 'जन्म मार्च 1866 में हुआ।' यही बात जनवरी 1906 के मासिक 'मनोरजन' में भी दुहराई गई ह, दूसरे मृत्यु-लेख में। इस प्रकार सब प्रमाणों से इतना तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता ह कि उनका जन्म 1866 में हुआ, यद्यपि निश्चित तिथि के बारे में एकवाक्यता नही ह। श्रीमती विजया राजाध्यक्ष ने इस विषय पर 'सत्यकथा' (मार्च 1966) में एक टिप्पणी लिखी ह, जिसमें यह लिखा ह कि कोई जन्म-तिथि साधिकार नोट की गई हो ऐसा निश्चित प्रमाण नही मिलता, और लिखती हैं कि 'कदाचित् कवि को भी अपनी जन्म-तिथि का पता नही था।'

 इसी प्रकार का विवाद उनके जन्म-स्थान को लेकर ह, और मृत्यु-तिथि के बारे में भी। यद्यपि कई जीवनी-लेखक सोचते हैं कि महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश में रत्नागिरि केपास मालगुड गाँव में उनका जन्म हुआ ; फिर भी उनके अपने हाथ से स्कूल-रेकॉर्ड में लिखी एक पक्ति के अनुसार दापोली ज़िले में वलणें वह स्थान था जहाँ उन्होंने जन्म लिया। हाल में महाराष्ट्र सरकार ने जब उनके जन्म-स्थान पर समुचित स्मारक निर्माण करने के लिए एक सभा बुलाई तो वहाँ जिस घर में उनका जन्म हुआ माना जाता था, उस पर भी शका प्रकट की गई।

 उनकी मृत्यु के बारे में भी ऐसी ही मत-भिन्नता ह। यह निश्चय हे कि 39 वर्ष की छोटी उम्र में हुबली में वे प्लेग या विषूचिका के शिकार हो गए। 7 नवम्बर, 1905 की दोपहर को उनका देहान्त हुआ और आठ दिन बाद 15 नवम्बर, 1905 को उनकी पत्नी की मृत्यु हुई। परन्तु श्री न.श.रहालकर ने और केशवसुत के जीवनीकार भाई ने 2 नवम्बर 1905 मृत्यु-तिथि दी ह। केशवसुत की पहली जीवनी जिस भाई ने लिखी वह उनसे बारह बरस छोटा था और यह पहला जीवन-रेखाचित्र उसने 'केशवसुत की कविता' के दूसरे सस्करण की भूमिका में लिखा। यह गलत तिथि बाद में केशवसुत के एक भतीजे परशराम चिन्तामण दामले ने सुधारी, उसी पुस्तक के चौथे सस्करण में। इस प्रकार 7 नवम्बर, 1905 केशवसुत की मृत्यु की निश्चित तिथि मानी जा सकती ह।

 उनकी कविता नें उनके जन्म-स्थान के दो उल्लेख मिलते हैं ; 'नक्तृत्येकडील वारा' (नक्तृत्य दिशा की वायु) में वे अपने गाँव के नाम का मालगुड से माल्यकूट में सस्कृत रूपान्तर करते हैं। कुछ समालोचकों का विचार ह कि 'एक खेडे' (एक देहात) में सस्मरणात्मक ढग से जिस गाँव का वर्णन ह वह 'वलणें' जसा ही ह और वही के पेड़-पौधे, फूल, पशु-पक्षी आदि का वर्णन उसमें मिलता ह; और वसा ही वर्णन ह 'समुद्र में जाती हुई कई नौकाओ और जहाज़ों' का।

 दामले चित्पावन कोंकणस्थ ब्राह्मण जाति का एक कुल-नाम ह। ये मूलतः रत्नागिरि के पास

	कोलाबे गाँव के हैं। केशवसुत के पिता केशव विट्ठल उर्फ़ केसोपंत दामले न मराठी शाला में शिक्षा पूरी करके पुश्तैनी खेती छोड़कर अध्यापक का काम पसन्द किया। पन्द्रहवें वर्ष में ही केशवसुत के पिता को अध्यापकी करनी पड़ी। वे सरकारी शिक्षा-सेवा में तीन रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त हुए थे ; सेवा-निवृत्त होते समय उनका वेतन तीस रुपये मासिक था। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था, और वे दस या ग्यारह रुपये की पेन्शन पाते थे। तब एक प्रसिद्ध ग्राम-नेता, ज़मींदार और दामले-परिवार के मित्र विश्वनाथ नारायण मंडलीक की वलणें में कुछ ज़मीन थी उसकी देख-भाल करने लगे। केशवसुत ने एक कविता 'सिंहावलोकन' में इस गाँव का नाम लिखा है। यह कविता वर्ड्सवर्थ के 'द प्रिल्यूड' (उपोद्घात) के ढंग पर लिखी गई है। यद्यपि केसोपंत की आमदनी बहुत थोड़ी थी, वे बिना कर्ज़ किये आराम से रहते थे। अनुशासन, स्पष्टवादिता और संकल्प-शक्ति के लिए उनकी ख्याति थी। केशवसुत ने अपनी कविताओं में पिता के लिए बहुत आदर व्यक्त किया है। केसोपंत की मृत्यु 1893 ईस्वी में हुई।	
	केशवसुत की माता मालदोली के ज़मींदार करन्दीकर-परिवार की थी। वह अपने पिता की एक-मात्र पुत्री थी और उज्जैन में 1902 ईस्वी में उनका स्वर्गवास हुआ। केशवसुत ने अपनी माता से भावुकता, आस्तिकता, उदारता और व्यापक मानवतावाद आदि गुण पाये। अपनी माता की मृत्यु पर केशवसुत ने एक विलापिका भी लिखी है।	
	केशवसुत अपने भाई-बहनों में चौथे थे। उनके पाँच भाई और छः बहनें थीं। सबसे बड़ा भाई, ग्यारह वर्ष की आयु में डूबने से मर गया। दूसरा था श्रीधर, जो बहुत बुद्धिमान न था और उसे जगन्नाथ शंकरशेट छात्रवृत्ति मिली, चूँकि उसने रत्नागिरि से हाई स्कूल परीक्षा में प्रथम स्थान पाया था। उसने एलफिन्स्टन कालेज से 1882 में बी.ए. की परीक्षा दी, और फिर बड़ौदा में तब नये ही खुले कालेज में संस्कृत का प्रोफ़ेसर नियुक्त हुआ। परन्तु एक वर्ष के भीतर ही विषम-ज्वर से उसकी मृत्यु हो गई, जनवरी 1883 में।	
	केशवसुत की आरम्भिक शिक्षा बहुत उपेक्षित-सी रही। अपने छोटे भाई के साथ उन्होंने रत्नागिरी ज़िले के खंड में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। आगे की अंग्रेज़ी पढाई के लिए दोनों भाई बड़ौदा भेजे गए। दोनों के विवाह उन दिनों की प्रथा के अनुसार बड़ी छोटी उम्र में हुए- केशवसुत का पन्द्रह वर्ष की आयु में और छोटे भाई का तेरह वर्ष की। केशवसुत की पत्नी रुक्मिणीबाई चितळे परिवार की थी और विवाह के समय उसकी आयु आठ वर्ष की थी। उनके बारे में कुछ पता नहीं चला, सिवा इसके कि वह बहुत दयालु और परिश्रमी थी और विशेष सुन्दर नहीं थी। पति-पत्नी दोनों लजीले, संकोची और स्वभाव से समाजभीरु थे। केशवसुत के तीन पुत्रियाँ थीं : मनोरमा, वत्सला, सुमती। केशवसुत अपनी एक कविता 'म्हातारी' में अपनी दूसरी पुत्री का उल्लेख करते हैं। केशवसुत के श्वसुर केशव गंगाधर चितले खानदेश ज़िले के चालिसगाँव में एक मराठी-शाला के हेडमास्टर थे।	
	उनके बचपन के बारे में, सिवा इन दो बातों के कि वे शरीर से बहुत कमज़ोर और स्वभाव से चिड़चिड़े थे, बहुत कम जानकारी मिलती है। दुर्बलता के कारण वे अधिक दौड़-धूप वाले और शक्ति-प्रधान खेलों में भाग नहीं ले सकते थे। वे लम्बे-लम्बे रास्तों पर अकेले घूमना पसन्द करते थे और बोलते बहुत कम थे। उनकी माता उन्हें कुछ सिरफिरा कहती थी। यद्यपि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि उनका बाह्य रूप क्षमा था, फिर भी कुछ मित्रों ने लिखा है "उनका चेहरा विचारपूर्ण और गम्भीर था"(किरात) । "जब वे दूसरों से बात करते तो नीची नज़र कर लेते, पर जब भी आँखें उठाते तो उनकी चमक भेद लेने वाली होती थी।" (विनायक	

	करंदीकर)। “वे पाँच फुट से कुछ अधिक ऊँचे रहे होंगे।” (गद्र)। वे गोरे, गोल चेहरे के थे और उनके भाल पर सदा ही लकीरें और बल पड़े रहते । एक बार उनके अध्यापक ने ऐसी दुर्मुख मुद्रा के लिए उन्हें डाँटा तो केशवसुत ने अपनी कविता ‘दुर्मुखलेला’ में लिखा :	
<p>	इसका मुख है कुरूप, पर वह, विधि चाहे नवकाव्य लिखेगा,	</p>
<p>	जिसको पढ़कर हर्षित होगी मही और डोलेंगे जन-जन	</p>
<p>	इस दुर्मुख के मुख से ऐसा बहने वाला है भविष्य में	</p>
<p>	सुन्दर सरस वाङ् मय निष्यन्द कि चारों ओर प्रवाह विलक्षण	</p>
<p>	तुम ही नहीं तुम्हारे वंशज पीकर उसे अघा जायेंगे	</p>
<p>	कोई भी तब नहीं कहेगा-‘कविवर का कैसा था आनन ?’	</p>
<p>	(1886)	</p>
<p>	इस तथ्य से सम्बद्ध एक बात तो यह भी है कि ये अपना फोटो खिंचवाना पसन्द नहीं करते थे। यद्यपि आज उनके भाइयों के फोटो मिलते हैं, फिर भी केशवसुत के जीवनकाल में न उनका फोटो लिया गया, न चित्र खींचा गया। एक बार उज्जैन में , जहाँ उनके बड़े भाई दर्शन के प्रोफ़ेसर थे दामले-परिवार के सब सदस्य एकत्रित हुए थे, और यह प्रस्ताव रखा गया कि पूरे परिवार का एक फोटो खींचा जाए, पर केशवसुत उसमें शामिल नहीं हुए।	</p>
<p>	उनका बचपन और शिक्षा काफी कष्टों में और खंडित रूप में हुई होगी। उनकी एक कविता से यह पता चलता है कि उन दोनों मास्टर बच्चों को बुरी तरह पीटते और सज़ा दिया करते थे। इससे उनके मन में बड़ा गहरा ज़ख्म बना होगा, जो कभी अच्छा नहीं हो सका।	</p>
<p>	1882 में वे अपने बड़े भाई श्रीधर केशव के पास बड़ौदा गए, जो विशेष योग्यता के साथ ग्रेजुएट बने और संस्कृत और गणित के प्रोफेसर नियुक्त हुए। दुर्भाग्य से केशवसुत अपने बड़े भाई के पास आठ महीने से अधिक न रह सके। श्रीधर 23 वर्ष की आयु में विषम-ज्वर के शिकार बने, ग्रेजुएट पदवी प्राप्त करने के एक ही वर्ष बाद। इससे परिवार को भयानक धक्का लगा। केशवसुत को शिक्षा के लिए अपने मामा रामचन्द्र गणेश करंदीकर के पास जाना पड़ा, जो वर्धा में वकील थे। उन दिनों वर्धा में अंग्रेज़ी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध नहीं था। इसलिए कृष्णाजी और उनके छोटे भाई मोरोपन्त को नागपुर भेजा गया। उनके पिता शिक्षा का व्यय नहीं उठा सकते थे और नागपुर की भयानक गर्मी केशवसुत के दुर्बल स्वास्थ्य के लिए असह्य थी। सात महीने केशवसुत नागपुर में रहे। इस अवकाश में मराठी के प्रसिद्ध कवि रेवरंड नारायण वामन टिळक और प्रो.पटवर्धन से कवि का परिचय बढा। प्रो.पटवर्धन की प्रशंसा में उन्होंने कविता भी लिखी है।	</p>
<p>	रेवरंड नारायण वामन टिळक के सम्पर्क ने केशवसुत को प्रेरणा दी, कविता लिखने के प्रति प्रेम जगाया। टिळक इस सम्पर्क के बारे में लिखते हैं : “केशवसुत और मैं बहुत घनिष्ठ मित्र थे। मैं उनकी काव्य-प्रतिभा के विकास को देख सकता हूँ। हम दो –तीन महीने साथ-साथ रहे, नागपुर में 1883 में, 1888 और 1889 में पूना में और 1895-96 में बम्बई में।” पूना में जब वे मिले, केशवसुत न्यू इंग्लिश स्कूल में मैट्रिक की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। और बम्बई में जब मिले तो वे मराठी ईसाई मासिक ‘ज्ञानोदय’ पत्रिका के कार्यालय में थे। केशवसुत के निकट सम्बन्धी डरते थे कि कहीं वह भी ईसाई न हो जाए, क्योंकि वह ‘ज्ञानोदय’ और रेवरंड टिळक के विशेष सम्पर्क में आए। केशवसुत बाइबल पढ़ना पसन्द करते थे, और एक बार	

	अपने छोटे भाई सीताराम से उन्होंने कहा था कि वे ईसाई धर्म अपनाना चाहते हैं (वि.स.करंदीकर, रत्नाकर, फरवरी 1926)। यद्यपि केशवसुत और टिळक मित्र थे, परन्तु उनकी कविता बहुत भिन्न थी। केशवसुत बहुत औजस्वी थे और उनमें सहसा चमकने वाली प्रतिभा थी। टिळक अधिक सौम्य और सपाट हैं। टिळक केशवसुत की इतनी प्रशंसा करते थे कि उन्होंने केशवसुत के जीवन-काल में ही उन पर एक कविता लिखी और उनकी मृत्यु के बाद दो कविताएँ-'काव्य-रत्नावली' (जनवरी 1906) में और 'मनोरंजन' (फरवरी,1906) में।	
	नागपुर के अल्पकालीन वास में एक समाज-सुधारक वासुदेव बळवन्त पटवर्धन से केशवसुत का परिचय हुआ। 1888 में केशवसुत ने उन पर एक लम्बी कविता लिखी। ऐसा लगता है कि पटवर्धन के कार्य-विषयक विचारों ने केशवसुत पर गहरा प्रभाव डाला था। दोनों के विचार प्रगतिशील थे। दोनों एकांतप्रिय थे और भीड़ से दूर रहते थे। पटवर्धन बाद में डेक्कन वर्नाक्यूलर सोसाइटी के आजीवन सदस्य बने, और आगरकर के बाद 'सुधारक' पत्र के सम्पादक। पटवर्धन पर लिखी कविता में केशवसुत ने कहा था :	
	उस अन्तरिक्ष के तारों में	
	कवियों को आत्माएँ देखती हैं	
	जासाधारण को काँच से दिखाई देता है	
	कवि को पत्थर में भी दिखाई देता है।	
	कुछ समीक्षकों ने इन पंक्तियों पर इमर्सन का प्रभाव देखा है। वस्तुतः इमर्सन स्वयं वेदान्त से प्रभावित था और केशवसुत अप्रत्यक्ष और अनजाने रूप से इसी सर्वान्तर्यामी एकात्मा के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं।	
	1883 में केशवसुत नागपुरुत छोड़कर अपने गाँव खेड़ को लौट आए, जो कोंकण में था। एक साल वहीं रहे। फिर आगे की शिक्षा के लिए पूना गए। न्यू इंग्लिश स्कूल के पुराने कागज़ों से यह तथ्य मिलता है कि 11 जून 1884 में केशवसुत ने इस स्कूल में प्रवेश पाया। पूना में वे 1889 तक रहे और वहीं से उन्होंने मैट्रिक पास किया, चौबीस बरस की आयु में। इतनी देर लगने का कारण यह था कि वे दो बार फेल हुए, अंग्रेज़ी में उन्हें पर्याप्त नम्बर नहीं मिले। उनके फेल होने का एक कारण यह था कि वे बहुत धीमे-धीमे लिखते थे। एक बार काव्य-चर्चा में वे ऐसे डूबे रहे कि परीक्षा-भवन में ही जाना भूल गए।	
	न्यू इंग्लिश स्कूल में उनकी भेंट हरी नारायण आपटे से हुई। आपटे मराठी के प्रसिद्ध उपन्यासकार और बाद में केशवसुत के मरणोपरान्त प्रकाशित एक मात्र काव्य-संग्रह के सम्पादक-प्रकाशक हुए। आपटे केशवसुत के कक्षा के साथी ही नहीं बल्कि घनिष्ठ मित्र थे। वहीं पूना में, गोविन्द वासुदेव कानिटकर नामक स्त्री-शिक्षा-समर्थक और अंग्रेज़ी साहित्य के प्रेमी कवि-अनुवादक से उनकी मैत्री हुई। कानिटकर की पत्नी भी एक विदुषी थी। न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे ने कानिटकर की ऐतिहासिक विषयों पर 'अकबर' और 'कृष्णाकुमारी'-जैसी लम्बी कविताओं की प्रशंसा की थी, यद्यपि वे स्काट-जैसे अंग्रेज़ी लेखक की शैली पर लिखी गई थीं। कानिटकर को श्रीमती हाइमेन्स, एलिज़ाबेथ बैरेट ब्राउनिंग, तोरुलता दत्त की कवीताएँ पसन्द थी ; उन्होंने टामस मूर, टामस हुड, बायरन, बर्न्स, कीट्स के गीतों का और जॉन स्टुअर्ट मिल के 'सब्जुगेशन ऑफ वीमेन' (स्त्रियों की दासता) का अनुवाद किया था। मासिक 'मनोरंजन' और 'निबंध-चंद्रिका' में कानिटकर-दम्पति, आपटे और केशवसुत नियमित रूप से	

	कविताएँ प्रकाशित करते थे। केशवसुत की तेरह कविताएँ 1888 से 1890 के बीच इन पत्रों में छपीं।	
<p>	यह मनोरंजक तथ्य है कि केशवसुत की काव्य-प्रतिभा के विकास में अंग्रेज़ी कविता का अध्ययन सहायक हुआ। कुछ लोग कहते हैं कि उनका यह पढ़ना पालग्रेव की 'गोल्ड़न ट्रेज़री' और मैक के 'ए थाउजेंड एंड वन जेम्स ऑफ इंग्लिश पोएट्री' तक सीमित था। परन्तु उन्होंने और भी अंग्रेज़ी किताबें अवश्य पढी होंगी, उदाहरणार्थ मैकमिलन के 'दि वर्क्स ऑफ राल्फ वाल्डो इमर्सन', जिसमें से कई उद्धरण वे निजी पत्रों में देते हैं। और तोरु दत्त का 'ए शीफ ग्लीण्ड इन दि फ्रेंच फील्ड्स' भी पढा होगा। उन्होंने ड्रमंड, गटे, पो, लौंगफेलो और शेक्सपियर के कुछ सॉनेट भी अनुवाद किए हैं। उन्होंने अंग्रेज़ी में भी कुछ पद्यबद्ध लिखने का यत्न किया। प्रो.मं.वि.राजाध्यक्ष अपने 'पाँच मराठी कवि' नामक ग्रन्थ में लिखते हैं कि उनका संस्कृत काव्य का अध्ययन भी गहरा था ; परन्तु कुछ अन्य समीक्षक इस बात को सही नहीं मानते, चूँकि मैट्रिक की परीक्षा में उन्हें संस्कृत में विशेष नम्बर नहीं मिले।	</p>
<p>	यद्यपि न्यू इंग्लिश स्कूल में केशवसुत के अध्यापकों में आगरकर और लोकमान्य बाल गंगाधि तिलक-जैसे प्रसिद्ध गुरुजन थे, फिर भी लगता है केशवसुत की रुचि उनके द्वारा पढ़ाए गए विषयों में नहीं थी। समाज-सुधारक आगरकर का उन पर गुरु के नाते अधिक प्रभाव पड़ा। कक्षा में लोकमान्य तिलक-जैसे अध्यापकों के केशवसुत व्यंग्य-चित्र बनाते या कागज़ पर निरर्थक रेखाएँ खींचते रहते। फिर भी उस समय के बड़े-बड़े वक्ताओं का उन पर प्रभाव पड़ा। पूना में वे दिन आँधीभरे थे। 1880 से चिपळूणकर ने 'निबंधमाला' में अंग्रेज़ी शिक्षा को 'बाघिन का दूध पीना' कहना शुरू किया था, तिलक 'केसरी' के स्तम्भों में गर्जना कर रहे थे और आगरकर अपने 'सुधारक' में समाज-सुधार के नवयुग का आवाहन कर रहे थे। किर्लोस्कर और भावे मराठी रंगमंच का निर्माण कर रहे थे ; हरी नारायण आपटे मराठी कथा-साहित्य को आकार दे रहे थे। परन्तु केशवसुत लज्जालु स्वभाव के थे, और वे समाज-सुधारकों और राजनीतिज्ञों के इस निनादमय रथ के साथ जाना पसन्द नहीं करते थे। वे कविता लिखने के अपने माध्यम से चिपटे रहे और शैली की भाँति आशा करते रहे-	</p>
<p>	मेरे मृत विचार सारे विश्व में फैला दो,	</p>
<p>	सूखे पत्तों की तरह, जिससे नया जन्म जल्दी हो !	</p>
<p>	(पश्चिमी हवा के प्रति)	</p>
<p>	यहाँ उनके जीवन पर उनके दो भाइयों के अप्रत्यक्ष प्रभाव का उल्लेख आवश्यक है। उनके छोटे भाई मोरो केशव दामले (1868-1913) बम्बई यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट थे, जिनके दर्शन और इतिहास ये दो विषय थे। वे माधव कॉलेज, उज्जैन में 1894 से 1907 तक दर्शन के प्रोफेसर रहे और बाद में 1908 में यह कॉलेज बन्द होने पर नागपुर सिटी स्कूल में पढाते रहे। पूना में 1913 में एक रेल-दुर्घटना में उनकी असामयिक मृत्यु हुई। उन्होंने 1911 में मराठी का पहला शास्त्रीय व्याकरण लिखा, जो 990 पृष्ठों का एक बृहद् ग्रन्थ है। बाद में वि.का. राजवाड़े-जैसे संस्कृत विद्वनों ने उसे बहुत शास्त्रीय नहीं माना। मोरो केशव ने बर्क के निबंधों का अनुवाद किया और मराठी में आगमनात्मक-निगमनात्मक तर्कशास्त्र पर पुस्तकें लिखीं। दूसरे भाई थे सीताराम केशव दामले (1878-1927), जो पत्रकार, उपन्यासकार और देशभक्त थे। वे 'ज्ञान प्रकाश' और 'राष्ट्र मत' के सम्पादकीय विभाग में कार्य करते थे ; मुळशी सत्याग्रह में	

	भाग लेने के लिए उन्हें दो वर्ष की सज़ा हुई। दामले-परिवार एक प्रतिभाशाली व्यक्तियों का परिवार था, परन्तु इसमें प्रायः सभी व्यक्तियों की मृत्यु अल्पायु में हुई। शायद यह बात केशवसुत की कविता में करुण स्वर का एक कारण हो।	
	मट्रिक के बाद केशवसुत गरीबी के कारण अपनी शिक्षा आगे नही चला सके। वे 1890 में नौकरी की तलाश में बम्बई पहुँचे। कोई ऊँची डिग्री न होने से उन्हें कठिनाई थी ही, साथ ही उनका स्वाभिमान भी बड़ा विलक्षण था। वे अपने परिवार के वि.ना. मण्डलिक-जैसे उच्चवर्गीय मित्रों से भी सहायता लेना नही चाहते थे। वे पहले मिशन स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए, और बाद में अमरीकन मिशनरियों के पत्र 'ज्ञानोदय' के कार्यालय में काम करने लगे। बाद में वे दादर न्यू इङ्गलिश स्कूल में अध्यापक बने। कभी-कभी उन्हें अपनी सीमित आय (उन्हें अपने जीवन में बीस से पच्चीस रुपये माहनार से अधिक वेतन कभी नही मिला) ट्यूशन करके पूरी करनी पड़ती । या कभी उन्हें अपने गाँव चले जाना पड़ता, क्योंकि उन्हें कोई काम ही न मिल पाता था। उनके जीवन का यह अनिश्चित, ऊँच-नीच से भरा प्रवाह उनके पिता को पसन्द नही था। पिता का आग्रह था कि केशवसुत प्रवाह-पतित लकड़ी की तरह इधर-उधर भटकते न रहें, किसी एक जगह पर जमजाएँ। इसलिए बहुत अनिच्छापूर्वक केशवसुत ने 1893 में बम्बई में बसने की बात सोची। उनकी 'सिंहावलोकन'-जैसी संस्मरणात्मक कविताओं में परिवार के अन्तर्गत कलह का उल्लेख हैं। वे कल्याण में 1891 तक एक अङ्ग्रेज़ी स्कूल में पढ़ाते रहे। उनकी इच्छा के विरुद्ध जब उनका स्थानान्तर कराची कर दिया गया तो इस बात को लेकर उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। वे टेलीग्राफ़ द्वारा सन्देश देने का काम भी सीखने लगे। 1893 में सामन्तवाड़ी में छः महीने के लिए वे शिक्षक बने।	
	वे बम्बई में अध्यापक के रूप में स्थिर जीवन बिताना ही चाहते थे कि उन्हें काशिनाथ रघुनाथ मित्र, जनार्धन घोंड़ों भाँगले और गोविन्द बालकृष्ण कालेलकर मिले, जो तीनों तरुण साहित्यिक और सम्पादक थे। केशवसुत ने 'विद्यार्थी मित्र' और 'मासिक मनोरञ्जन'(स्थापना 1895) में बहुत-सी कविताएँ लिखी। मित्र और भाण्डाले बङ्गाली और गुजराती अच्छी तरह जानते थे। भाण्डाले ने बङ्किमचन्द्र के उपन्यास और गुजराती से एक उपन्यास अनुवादित किया था। 1894 में बङ्किमचन्द्र का प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्द मठ' मराठी में 'आनन्दाश्रम' बना। इसी में प्रसिद्ध राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' था। केशवसुत ने अपनी कविता 'कवितेचे प्रयोजन' (1899) में भारतमाता के लिए 'सुजला' और 'सुफला' विशेषण प्रयुक्त किये हैं। बम्बई में रहते हुए वे 'माधवानुज' (डॉ. काशीनाथ हरी मोडक, 1872-1918), 'किरात', गजानन भास्कर वैद्य (जो 'हिन्दू मिशनरी' नाम से प्रसिद्ध थे) आदि कवियों के सम्पर्क में आए। वैद्य के भाई ने पेन्सिल से केशवसुत का एक रेखाचित्र बनाया था, स्मृति के सहारे। केशवसुत प्रार्थना-समाज (महाराष्ट्र में बङ्गाल के ब्रह्म-समाज के समान पन्थ), आर्य समाज, ईसाई मिशन आदि स्थानों में व्याख्यान सुनने जाना पसन्द करते थे। 1896 में जब बम्बई महामारी के चक्कर में आ गई तब केशवसुत को बम्बई छोड़कर खानदेश के भड़गाँव में जाना पड़ा। वे अपनी पत्नी और पुत्रियों को चालिस गाँव में सुरक्षित रखना चाहते थे, अपने श्वसुर के पास, जो वहाँ हेडमास्टर थे। उनके श्वसुर ने उन्हें भड़गाँव के एङ्ग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल में अध्यापक पद के लिए आवेदन-पत्र देने को कहा और वे वहाँ पन्द्रह रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त भी हो गए।	
	1897 से मार्च 1904 तक केशवसुत खानदेश में रहे, जहाँ वे पहले भड़गाँव के मुयुनिसिपल स्कूल में काम करते रहे। परन्तु वेतन असन्तोषजनक था और पेन्शन की कोई सुविधा नही	

	थी, इसलिए वे 1898 में सरकारी एस.टी.सी.परीक्षा में बैठे और उत्तीर्ण हुए। 1901 में वे फ़ैजपुर (खानदेश) में अंग्रेज़ी स्कूल के हेडमास्टर नियुक्त किये गए। वहाँ वे अंग्रेज़ी पढ़ाते थे। दुर्भाग्य से, फ़ैजपुर में अगले ही वर्ष महामारी फैल गई और स्कूल बन्द कर देने का भय पैदा हुआ। यहाँ भी केशवसुत के स्वतंत्र स्वभाव और मुक्त चिन्तन के कारण अधिकारियों से उनकी लड़ाई हो गई, और उन्होंने स्थानान्तर के लिए आवेदन-पत्र दिया। अप्रैल 1904 में मराठी अध्यापक के नाते उनका धारवाड़ हाई स्कूल में स्थानान्तर हुआ।	
	खानदेश में वे 'काव्य-रत्नावली' नामक केवल कविताएँ प्रकाशित करने वाले मासिक पत्र के संपादक के सम्पर्क में आए। सम्पादक नारायण नरसिंह फडणीस बड़े काव्य-मर्मज्ञ थे और उन्होंने केशवसुत के बारे में लिखा है: "केशवसुत उन पाँच कवि-रत्नों में से थे जिनपर हमारी पत्रिका को गर्व था। उनकी 'हरपले श्रेय' कविता अन्तिम रचना थी जो हमने प्रकाशित की।...वे स्वतन्त्र विचारों के कवि थे। उनकी कविताओं में विचारों की भव्यता और उदारता देखकर सुखद आश्चर्य होता था। उनका स्वभाव बहुत अव्यावहारिक था, कभी-कभी विक्षिप्त-जैसा लगता था। हम उन्हें दो-तीन बार ही मिले। पर वे बातचीत में बहुत संकोची थे।" (काव्य-रत्नावली, 1905 का अन्तिम अंक)	
	खानदेश में केशवसुत की भेंट प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि 'विनायक' (विनायक जनार्धन करंदीकर 1872-1909) से हुई। वे बम्बई में 1891-92 में मिले। केशवसुत उन्हें 'महाराष्ट्र का बायरन' कहते थे। दोनों में बहुत-सी बातें समान थीं। विशेषतः सामाजिक अन्याय और राजनैतिक दासता के विरुद्ध विद्रोह। केशवसुत के जीवन के ये अन्तिम वर्ष कुछ अच्छे बीत रहे थे। उन्हें आवश्यक सहज परिवेश और पढ़ने को काफ़ी पुस्तकें मिलीं। उन्होंने काव्य की प्रकृति पर पर्याप्त विचार किया और गम्भीर विषयों पर मित्रों के साथ पत्र-व्यवहार भी किया। उनकी रचनाओं में अब रहस्यवाद की ओर रुझान दिखाई देता था।	
	केशवसुत अप्रैल 1904 से डेढ़ वर्ष धारवाड़ में रहे। यहाँ वे जीवन की असारता और उसके अनिवार्य करुण अन्त पर विचार करते रहे। शायद उन्हें अपने अकाल मरण की पूर्वसूचना प्राप्त हो गई थी। 25 मई, 1905 को चिपलूण में लिखी अपनी अन्तिम कविता के बारे में लिखते हुए वे अपने एक मित्र को लिखते हैं : "'मनोरंजन' के गताङ्क में मेरी रचना पढ़कर मेरी मनःस्थिति का पता लगा सकते हैं। हृदय में जैसे घाव पड़ा है। परन्तु हाय ! इसका उपाय कहाँ है? "	
	सचमुच कोई उपाय नहीं था। वे अपने बीमार चाचा हरी सदाशिव दामले से मिलने अक्तूबर के अन्त में हुबली गए। उनके साथ उनकी पत्नी और पुत्री भी थीं। चार-पाँच दिन वहाँ ठहरकर वे धारवाड़ लौटने वाले थे। पर 7 नवम्बर को उन्हें महामारी लील गई और उनकी मृत्यु हो गई। उनका दाह-संस्कार उनके चाचा ने किया, और तीन पुत्रियाँ कोंकण भेज दी गईं। उनमें से एक की शीघ्र ही मृत्यु हो गई। अन्य दो के विवाह हो गए और बाद में उनके बारे में विशेष पता नहीं चला।	
	केशवसुत के करुण छोटे जीवन के 39 वर्ष। उनके सम्बन्ध में सबसे अच्छी टिप्पणी उन्हीं के शब्दों में होगी। कवि सम्मेलनों के बारे में अपने एक मित्र को व्यक्तिगत पत्र में उन्होंने लिखा था :	
	"प्रतिवर्ष कवियों के एक सम्मेलन के विषय में-व्यावहारिक लोग व्यावहारिक कार्यों के लिए	

	निश्चित अवधि के बाद मिलते रहते हैं। कवियों को स्वप्न दर्शियों के नाते एकान्त में बठना चाहिए, सबसे अलग, नीरवता की आकाश-ध्वनि को सुनते हुए और अपनी अनगढ़ भाषा में उसे व्यक्त करते हुए, जब उन पर प्रतिभा प्रसन्न हो जाए। कभी-कभी दो-तीन समानधर्मा साथ आ सकते हैं... पर उनसे अधिक सख्या सब मज़ा किरकिरा कर देगी।"	
	और उन्होंने उस समय की मराठी कविता की दशा के बारे में एक अन्य मित्र को लिखा :	
	"कृपया उनसे कहिए कि मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे एक लम्बी कविता लिखें। छोटी-छोटी कविताएँ लिखने में क्यों समय नष्ट करते हैं। पिछली एक शताब्दी में कोई लम्बी महत्त्वपूर्ण कविता नही रची गई ; और यह काम तो...और...जसी प्रतिभाओ का ह कि वे कलक को दूर करें। मुझे दुःख ह कि मैं बहुत छोटा हूँ और अपने इस बौनेपन के ऊपर उठने के कोई लक्षण अपने में नही पाता। इसलिए मुझे अपने प्रति घृणा ह और मुझे वे कोई लोग पसन्द नही जो छोटी-चीज़ों के लिए प्रयत्न करते हैं।"	
	ये पत्रा मूलतः अग्रेज़ी में लिखे पत्रों से हैं।	

</body></text>
</Doc>